विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

लोकप्रिय राहतों का राज्य की अर्थव्यवस्था पर दूरगामी असर

इन दिनों रेवड़ियां बांटना जुमला राजस्थान में बड़े चलन में है। राज्य सरकार जिस प्रकार राहत शिविर लगा कर तथा अन्य तरीकों से खुले हाथ से नागरिकों को सुविधाएं और मदद जिनमें अधिकतर कैश है बांट रही है उसी पर इस जुमले से तंज कसा जा रहा है। रेवड़ियां शब्द बना है 'रेवड़' से जिसका अर्थ होता है जानवरों का झुंड या समूह। जैसे गायों, भेड़ों या ऊंट का रेवड़। हमारे यहां जानवरों के समूह को चारा या अन्य कुछ डालने की पुरानी परंपरा रही है। इसे पुण्य का काम माना गया हैं। यह एक प्रकार का दान होता है जो कोई व्यक्ति अपनी कमाई से कुछ धन निकाल कर करता है। रेवड़ के जानवरों को जब कुछ खिलाया जाता है तो उनमें फ़र्क नहीं किया जाता। रेवड़ से शब्द बना रेवड़ी। यह तिल से बनी मीठी गोल टिकिया होती है जो अधिकतर मंदिर में या अन्य जगहों पर कथा-कीर्तनों के बाद भक्तों में मुट्ठी भर-भर कर बांटी जाती है। बांटने में कोई भेद नहीं किया जाता, वह सबको समान रूप से मिलती है। देने वाला कोई भेद नहीं करता। उसे सिर्फ देने का पुण्य प्राप्त करना होता है। उसी से लोक व्यवहार में रेवड़ियां बांटने का मुहावरा चलन में आया। यह सवाल स्वाभाविक ही पूछा जा सकता है कि कोई लोक कल्याणकारी सरकार यदि जनता के लिए कुछ करती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सीधे कुछ मिलता है, भले ही वह वस्तु के रूप में हो या रोकड़ा के रूप में तो उसे रेवड़ियां बांटना कैसे कह सकते हैं? गणतंत्र में नागरिक ही अपने वोट से अपने प्रतिनिधि चुनते हैं जो बहुमत के आधार पर पांच वर्ष के लिए शासन की बागडोर संभालते हैं। और जब आबादी का एक बड़ा वर्ग गरीब हो तब निर्वाचित सरकार का फ़र्ज़ बनता है कि आफत में उनको राहत पहुंचाने की व्यवस्था हो। जरूरत पड़ने पर उनकी सीधी मदद की जाय। उन्हें जीवन यापन का कोई सामान दे दिया जाय या उसके एवज में कैश दे दिया जाय। क्योंकि सरकार का दायित्व सभी वर्गों के प्रति होता है इसलिए वह ऐसे कदम भी उठाती है कि किसी एक वर्ग को कुछ मिल जाए तो दूसरा नाराज न हो जाए इसलिए उसे भी शांत रखने या उसे तसल्ली देने के लिए उसके लिए भी वैसी ही मदद की कुछ व्यवस्था कर दी जाती है। इसे बहुत से लोग राजनीतिक संतुलन साधना भी कह सकते हैं। चुनावी प्रतिस्पर्धा वाली राजनीति में विपक्ष द्वारा इसकी खिल्ली उड़ा कर उस मदद से सत्तारूढ़ दल को होने वाले संभावित राजनैतिक लाभ को कम करने का प्रयास भी लोकतंत्र में आम चलन में हमेशा से रहा है। मीडिया भी अपनी सुर्खियों में इस जुमले का जम कर उपयोग करता है। लेकिन अंततः मतदाता ही फैसला करता है कि अगली बार उसे किसे चुनना है। दूसरी तरफ से यह कहा जा सकता है कि राहतों की बरसात के राज्य सरकार के कदम को इस आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती कि वह ऐसा करके राजनीति कर रही है। कोई निर्वाचित सरकार अगर जनता को राजकोष से कुछ देती है तो वह उसका भला ही कर रही होती है। इसमें गलत क्या है? मगर यह जवाब इतना आसान नहीं है।

भारतीय गणतंत्र में लोकतान्त्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार एक ट्रस्टी के रूप में काम करती है। उसका काम विभिन्न करों और अन्य माध्यमों से राजकोष को बनाना और फिर उस राजकोष की राशि को विकास के कामों पर खर्च करना होता है जिससे विकास की ऐसी व्यवस्था हो जिसमें आम जनता को सुविधाएं मिले, उनका जीवन स्तर ऊंचा हो, उनके लिए रोजगार की संभावनाएं बढ़े और वे आर्थिक गतिविधियों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने के लिए सक्षम बन सकें व समाज के सभी वर्गों में खुशहाली आ सके। निर्वाचित सरकारें जनहित के लिए संवैधानिक ढांचे में काम करती हैं। उसी में राजकोष के प्रबंधन – आय और व्यय – की व्यवस्था के स्पष्ट प्रावधान है। इसीलिए राज्य सरकार को प्रति वर्ष बजट बना कर विधान सभा के सामने जाना पड़ता है और वहां राजकोष की पाई-पाई का हिसाब देना पड़ता है। अगले वर्ष राजकोष में कहां-कहां से पैसा आने वाला है और किस मद में खर्च किया जाने वाला है उसका ब्यौरा देते हुए सदन से अनुमति लेनी होती है। गत 10 फरवरी को अपने मौजूदा कार्यकाल का पांचवां और अंतिम बजट प्रस्तुत करते हुए मुख्यमंत्री ने साफ-साफ संकेत दे दिया था कि वे इस साल के अंत में होने वाले विधान सभा चुनाव के लिए कमर कस रहे हैं। उन्होंने राज्य विधान सभा में अब तक का सबसे लंबा तीन घंटे 16 मिनट का बजट भाषण पढ़ा जिसमें घोषणाओं की बौछार लगा दी थी। अब उसी को आगे बढ़ाते हुए राहत शिविरों का आयोजन भरपूर प्रचार के साथ चल रहा है ताकि आने वाले चुनावों में मतदाता सत्तारूढ़ दल पर रीझे रहें। यही कारण है कि इन राहतों को रेवड़ियां बंटने की तोहमत झेलनी पड़ रही है। राजनीतिक आरोप प्रत्यारोप के बाहर आकर शासन के इन कदमों को उसके राजकोष का ट्रस्टी होने की अवधारणा के तहत देखने की जरूरत है। गणतांत्रिक व्यवस्था में कोई यदि यह कहता है कि आप मांगते थक जाओगे, मैं देता नहीं थकूंगा तो वह पुरानी सामंती प्रवत्ति का ही द्योतक होगा। बजट केवल आय-व्यय का मात्र लेखा-जोखा ही नहीं होता वह प्रदेश के ऐसे संतुलित विकास की ऐसी राह बनाने वाला होता है जो आने वाली पीढ़ियों को आसान और बेहतर जीवन दे सके भले ही मौजूदा समय की पीढ़ी थोड़ी तकलीफ झेल ले। इसलिए यह जानना जरूरी हो जाता है कि जिस प्रकार की राहतों की बिपरजॉय बारिश राज्य सरकार कर रही है उसकी चालू वर्ष के बजट में किस प्रकार व्यवस्था होगी और राज्य की आर्थिक हालत पर उसके क्या दूरगामी परिणाम होंगे? खुद सरकार के ही आंकड़े चीख-चीख कर बताते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में, राज्य सरकार के राजकोषीय घाटे के वित्तपोषण के पैटर्न में बाजार से ली जा रही उधारी में भारी वृद्धि हो रही है। बजट के आंकड़ों में थोड़ा झांकें तो पाते हैं कि जब से मौजूदा निर्वाचित सरकार ने काम-काज संभाला है तब ही से राज्य पर लोक ऋण बढ़ता जा रहा है। बीच में केवल एक वर्ष 2021-22 में यह थोड़ा नीचे आया। वह लगातार बढ़ रहा है और चालू वित्त वर्ष में यह अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुंच गया है। रिजर्व बैंक के एक विश्लेषण पत्र में कहा गया है कि बाजार उधारी की मात्रा में वृद्धि से राज्यों की राजकोषीय स्थिति के बारे में लागत और चिंताएं बढ़ जाती हैं, और उधार लेने की लागत को कम करने के लिए बेहतर वित्तीय प्रबंधन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है। लेकिन जब चुनाव सिर पर हों तब समझदारी की सारी बातें किनारे धर दी जाती है।

राजनीतिक आरोप प्रत्यारोप के बाहर आकर शासन के इन कदमों को उसके राजकोष का ट्रस्टी होने की अवधारणा के तहत देखने की जरूरत है। गणतांत्रिक व्यवस्था में कोई यदि यह कहता है कि आप मांगते थक जाओगे, मैं देता नहीं थकूंगा तो वह पुरानी सामंती प्रवत्ति का ही द्योतक होगा।

शासन ने सबसे बड़ी राहत अपने कर्मचारियों को उनके लिए राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) को हटा कर पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) को फिर से लागू करके दी है। इस बात की राहत है कि इस राहत का वित्तीय बोझ तत्काल महसूस नहीं किया जाएगा। इस बजट में राजस्थान सरकार को पिछले साल एनपीएस के लिए 1,926 करोड़ रुपये का आवंटन करना पड़ा था। पुरानी योजना लागू कर देने से इस साल वह घाट कर में 5 करोड़ रुपये हो गया है। लगता है इसी बचत का पैसा राहतों में दिया जा रहा है। लेकिन जब एनपीएस के लागू होने के बाद शामिल हुए कर्मचारी वर्ष 2034 से सेवानिवृत्त होने लगेंगे, तब ओपीएस में वापस लौटने की लागत दिखाई देने लगेगी जिसे आने वाली सरकारें और पीढ़ीयां चुकाएगी। अर्थशास्त्री कहते हैं कि ओपीएस को अपनाने से भावी पीढ़ी की कीमत पर वर्तमान पीढ़ी को लाभ दिया गया है। राहतों के लिए पैसा इसके अलावा और कहां से निकला है उसका पता बजट विश्लेषणों से चलता है। बजट में क्षेत्रवार व्यय को देखें तो पाते हैं कि इस साल ग्रामीण विकास पर प्रावधान 15 प्रतिशत कम कर दिया गया है। विकास की असली धुरी ऊर्जा मानी जाती है। विकास की तरफ बढ़ने वाली कोई भी अर्थव्यवस्था ऊर्जा को कमतर करके नहीं आंक सकती। किन्तु ऊर्जा क्षेत्र पर खर्च में सिर्फ एक प्रतिशत की मामूली वृद्धि चालू वित्तीय वर्ष के लिए की गई है। हालांकि राहतों को लोक कल्याणकारी बता कर प्रचारित किया जा रहा है किन्तु दूसरी तरफ समाज कल्याण और पोषण के कामों पर सरकार ने पिछले साल से केवल एक प्रतिशत अधिक खर्च की व्यवस्था ही की है। प्रमुख क्षेत्रों के लिए किए गए बजट आवंटन के अनुमान और वास्तविकता के आंकड़े भी यही कहानी कहते हैं। 2021-22 में आवासन के लिए जितने रुपये आवंटित किए गए मगर वास्तव में उससे 31 प्रतिशत कम दिए गए। इसी प्रकार अनुसूचित, जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यकों के मद में तथा जल आपूर्ति व स्वच्छता मद में जितने रुपयों का बजट आवंटन किया गया उसके मुकाबले वास्तव में दस-दस प्रतिशत दोनों मदों में आवंटन कम दिया गया। सड़कों और पुलों के निर्माण के लिए आवंटन से आठ प्रतिशत कमी तथा सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण व शिक्षा, खेलकूद, कला और संस्कृति को सात प्रतिशत पैसा कम कर दिया गया। संसदीय लोकतंत्र में यह नैतिक सवाल जरूर हो सकता है कि लोकप्रियता पाने के लिए राज्य की अर्थव्यवस्था की बलि चढ़ा देना कितना उचित है? लेकिन आज की राजनीति में नैतिकता की बात करने की किसे फुरसत है, पक्ष हो या विपक्ष।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

पहली बारिश ने सड़क निर्माण व सफाई व्यवस्था की पोल खोली

चाकसू, (निसं)। नगरपालिका प्रशासन द्वारा सड़कों का जाल बिछाने एवं बरसात पूर्व नाले नालियों की सफाई करने के दावे धरे के धरे रह गए। मानसून पूर्व की पहली बारिश ने नगरपालिका क्षेत्र में सड़कों की क्षत-विक्षत हालत एवं गंदगी और कचरे से भरे नाले-नालियों की पोल खोल कर रख दी।

क्षेत्र में कार्यरत इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया के बंधुओं ने कस्बे की सम्पर्क सड़कों राधिका गार्डन रोड, टिगरिया रोड, निमोडया रोड, सूरजकुंड रोड फागी रोड, कस्बे के विभिन्न वार्डों की सड़कों की हालत बदहाल हो रही थी। अपने सडकों पर पैदल निकलना भी परेशानी भरा हुआ था। आस-पास के लोगों की यह आम शिकायत रहती है कि वार्ड पार्षद की शिकायत के बावजूद अधिशासी अधिकारी कभी भी कस्बे की साफ-सफाई एवं खश्ता हाल सड़कों का अवलोकन तक नहीं करते।

अधिशासी अधिकारी से आग्रह किया गया है कि समय निकाल कर नगरपालिका क्षेत्र के हालात की जानकारी अवश्य करें एवं समय रहते समाधान करवाएं। वहीं नगरपालिका चैयरमेन कमलेश बैरवा कहना है कि मानसून की बरसात से पहले छोटे-बड़े सभी नाले-नालियों की युद्ध स्तर पर साफ-सफाई करवाई जा रही है एवं क्षतिग्रस्त सड़कों की आवश्यकता के अनुसार मरम्मत एवं निर्माण भी किया जा रहा है।

■ **सड़कों की क्षत-विक्षत हालत एवं गंदगी और कचरे से भरे नाले-नालियां**

लोगों ने बताया कि वार्ड नंबर 31 राधिका गार्डन वाला जो रोड है पाटनी बिल्डर्स से लक्ष्मी नगर, पाटिया वाली ढाणी, को जाने वाला उस रास्ते का बहुत बुरा हाल है अभी तो मानसून पूर्व की हल्की सी बारिश हुई है जिसमें आना जाना बंद हो गया है। कृपया नगर पालिका प्रशासन व पार्षद मांगीलाल बैरवा से गुजारिश की है कि हमारे रास्ते को स्थाई नहीं बना पा रहे हैं तो कम से कम इसकी रिपेयरिंग करवा दें, मोहरम मिट्टी रोडी डलवा कर के और कुटाई करवा के रोलर से और सही करा दे तो स्कूली बालकों, बड़े-बूढ़े लोगों एवं दोपहिया वाहन चालकों को थोड़ी राहत मिल सके। अधिशासी अधिकारी महोदय से निवेदन है कि कस्बे की समस्याओं से मोके पर पहुंच कर जायजा ले एवं अपने स्व पर समाधान करवाए।

चाकसू में क्षतिग्रस्त सड़कों से लोगों को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

डी.पी.सी. न होने पर धरना देकर रोष जताया

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग कार्मिकों ने मंगलवार को नियमित डी.पी.सी. नहीं होने के कारण आयोग कार्यालय में धरना दिया। आयोग कार्मिकों ने 23 जून तक डीपीसी आयोजित कराने का अल्टीमेटम आयोग प्रशासन को दिया है। मंत्रालयिक कर्मचारी संघ के अध्यक्ष प्रवीण मीना ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा कार्मिकों को 02 साल की छूट देते हुए नियमित डीपीसी. करने संबंधी परिपत्र 17 मई को जारी किया गया था इसके अनुक्रम में शासन सचिवालय में 18 मई को नियमित डी.पी.सी. आयोजित की जा चुकी है। 6 अन्य विभागों में भी डीपीसी का आयोजन किया जा चुका है लेकिन आयोग कार्मिकों की नियमित डीपीसी प्रशासनिक उदासीनता के चलते आज तक भी लंबित है। नियमित डीपीसी आयोजित किए जाने के संबंध में पूर्व में भी संघ द्वारा 26 मई तथा 30 मई को ज्ञापन दिए गए थे। उन्होंने कहा कि समय पर डीपीसी आयोजित नहीं किया जाना कर्मचारियों के हितों पर कुठाराघात है।

रेलवे द्वारा यात्रियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिये स्पेशल ड्राइव

अजमेर, (कासं)। रेलवे द्वारा यात्रियों को बेहतर और अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से स्पेशल ड्राइव चलाई जा रही है।

रेलवे बोर्ड के आदेशों के अंतर्गत रेल यात्रियों को सुविधा, साफ सफाई, पानी की व्यवस्था आदि की विशेष निगरानी के लिए आगामी 15 दिनों तक विशेष रूप से स्टेशन व सामान्य कोचों में उचित निगरानी के लिए एक अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत स्टेशनों/ट्रेनों की सफाई, शौचालयों की सफाई, ट्रेनों में एसी कोचों में एसी का ठीक तरह से संचालन, भीड़ पर नियंत्रण, पीने के पानी की उपलब्धता जैसे मामलों पर विशेष निगरानी रखी जाएगी। इसके अतिरिक्त शिकायत निवारण के लिये त्वरित व्यस्था का प्रावधान किया गया है जिससे किसी भी शिकायत/समस्या का शीघ्र निवारण किया जा सकें। इसके लिए अजमेर मंडल पर मंडल रेल प्रबंधक राजीव धनखड़ के निर्देश पर अपर मंडल रेल प्रबंधक बलदेव राम द्वारा आदेश जारी किए गए हैं जिसके अंतर्गत अगले 15 दिनों के लिए अजमेर स्टेशन पर चौबीसों घंटे अधिकारियों की तैनाती के आदेश जारी किए गए हैं।

कलेक्टर के बंगले से नागिन के बाद आठ फीट लंबा नाग भी पकड़ा

पाली कलेक्टर नमित मेहता के बंगले से 8 फीट लंबे साँप को पकड़कर दूर जंगल में सकुशल छोड़ा।

पाली, (निसं)। पाली जिला कलेक्टर महोदय नमित मेहता के बंगले से 8 फीट लंबे साँप को पकड़ा और दूर जंगल मे सकुशल छोड़ा।

प्रबल सिंह ने बताया कि 26 मई को पाली जिला कलेक्टर के बंगले से 8 फिट लंबी गर्भवती नागिन को पकड़ा था और उस समय सर्प मित्र गजेन्द्र सिंह मण्डली ने कहा था कि यहाँ साँपो का जोड़ा है और कभी भी नाग नजर आ सकता है और वही हुआ, आज 19 जून सोमवार को 8 फिट लंबा नाग भी नजर आ गया, जिसे पकड़ने के लिए कलेक्टर आवास से पाली जिले के सर्प मित्र गजेन्द्र सिंह मण्डली को बुलाया गया। गजेन्द्र सिंह मण्डली तुरंत मौके पर पहुंचे और नेवले जितनी फुर्ती दिखाते हुए 8 फिट लंबे नाग को अपने काबू में किया तथा दूर वन विभाग के जंगल मे ले जाकर सकुशल छोड़ दिया, तब जाकर कलेक्टर आवास में ड्यूटी करने वाले सभी कर्मचारियों और अधिकारियों ने राहत की साँस ली और गजेन्द्र सिंह मण्डली की नेवले जैसी फुर्ती की सराहना की और उन्हें लंबी उम्र का अशीर्वाद प्रदान किया।

गौरतलब रहे कि 1 जून को गजेन्द्र सिंह मण्डली को 5 फिट लंबे कोबरा साँप ने काट लिया था और पाली के ट्रॉमा वार्ड में एंटी डोज लगवाने के बाद डॉक्टर अनिल कुमावत नें जोधपुर एक रात जोधपुर के एम्स अस्पताल में इलाज के लिए भेज दिया था। एम्स अस्पताल में रात भर इलाज लिया था और सुबह 3 बजे वहाँ के डॉक्टरों ने कहा था कि अब आप पूर्ण रूप से खतरे से बाहर है और आप 3 दिन पाली के बांगड़ अस्पताल में वहाँ के डॉक्टरों की देखरेख में रहना तो फिर सुबह पाली आकर गजेन्द्र सिंह मण्डली पाली के बांगड़ अस्पताल में 3 दिन के भर्ती हुए थे और डॉक्टर हजारीमल चैधरी, डॉक्टर प्रवीण गर्ग, डॉक्टर राकेश सोनी और अन्य कई जूनियर डॉक्टर ने गजेन्द्र सिंह मण्डली को अपनी देखरेख में रखा था और फिर छुट्टी दी थी और सब जनता के आशीर्वाद से गजेन्द्र सिंह मण्डली को कुछ भी नही हुआ और वो फिर से जनता की सेवा उपस्तिथ हो गए।

झमाझम बरसात के बाद खाद-बीज की दुकानों पर रही भीड़

निवाई में बरसात होने के बाद किसानों ने खाद-बीज की दुकान से खरीदारी की।

निवाई, (निसं)। शहर सहित उपखण्ड क्षेत्र में मंगलवार को झमाझम बारिश हुई। बारिश के साथ ही शहर में स्थित खाद-बीज की दुकानों पर किसानों की भीड उमड पड़ी। किसानों की भीड के चलते झिलाय रोड पर दिनभर यातायात बाधित रहा। सडक पर किसानों के ट्रेक्टर, जीपें, जुगाड एवं अन्य साधनों के खडे रहने से जाम की स्थिति बनी रही। खाद-बीज के दुकानदारों द्वारा दुकान के बाहर सडक पर कॉउन्टर लगा देने व खाद-बीज के कट्टे जमा देने से सडक मार्ग छोटा पड गया जिससे भी यातायात में बाधा उत्पन्न हुई । इधर सोमवार को भी दिनभर बरसात होती रही। ग्रामीण क्षेत्र में तेज बारिश से खेत लबालब हो गए और तालाबों में पानी की आवक हुई। शहर में स्थित नालों में भी बरसात से उफान आ गया एवं कई स्थानों पर सडकों पर पानी भर गया।

घंटाघर पर 26 घण्टे अखण्ड सूर्य नमस्कार का रिकॉर्ड बनायेंगे शिक्षक व छात्र

जोधपुर, (कासं)। नौवे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के उपलक्ष में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा एक माह पूर्व से आयोजित किए जा रहे योग कार्यक्रमों की क्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, छात्र-छात्राओं एवं कार्मिकों द्वारा विश्वविद्यालय की योग- टीम के साथ सूर्यनगरी जोधपुर स्थित घंटाघर पर 21 जून को प्रातः 8.30 बजे से 22 जून प्रातः 10.30 बजे तक 26 घंटे अखंड सूर्य नमस्कार का रिकॉर्ड प्रदर्शन किया जाएगा।

कुलपति प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति ने बताया कि छब्बीस घंटों तक आयोजित होने वाले अखण्ड सूर्य नमस्कार के कार्यक्रम में घन्टाघर पर विश्वविद्यालय की टीम के साथ-साथ राज्य की सभी संबद्धता प्राप्त आयुष महाविद्यालयी एवं अनेक विद्यालयों के शिक्षक और छात्र-छात्राएं भी फेसबुक एवं यूट्यूब के माध्यम से सहभागी बनेंगे।

कुलपति प्रों. प्रजापति ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जोधपुर के नागरिकों को स्वास्थ्य संरक्षण के प्रति जागरुक करने के लिए सूर्य नमस्कार के अखण्ड प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने ने कहा कि वर्तमान समय में विकृत जीवन शैली के कारण स्वास्थ्य जैसा महत्त्वपूर्ण मुद्दा उपेक्षित है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य की जिम्मेदारी महसूस कराने हेतु जागरूकता की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य संरक्षण के लिए परम लाभदायी सूर्य नमस्कार एक सहज सरल महत्वपूर्ण योग है, जिसमें अनेक योगासनों का समावेश है अतः सूर्य नमस्कार के नियमित अभ्यास से जीवन शैली जन्य रोगों जैसे मधुमेह, मोटापा, थायरॉयड, जोड़ों की जकड़न, ब्लड प्रेशर तनाव इत्यादि का प्रभावी समाधान किया जा सकता है।

■ **आयुष कॉलेजों और विभिन्न स्कूलों के शिक्षक-छात्र होंगे शामिलभरे नाले-नालियां**

कुल सचिव सीमा कविया ने बताया कि इस ऐतिहासिक कार्यक्रम का घंटाघर पर कल बुधवार प्रातः 8.30 बजे कुलपति प्रो. प्रजापति के साथ जोधपुर उत्तर की महापौर श्रीमती कुन्ती देवडा, संभागीय आयुक्त कैलाश चन्द्र मीना तथा जिला कलेक्टर हिमांशु गुप्ता शुभारंभ करेंगे।

कुलसचिव ने बताया कि इस कार्यक्रम का एलईडी स्क्रीन द्वारा एवं यूट्यूब फेसबुक इत्यादि पर जीवंत प्रसारण किया जाएगा। सूर्य नमस्कार प्रदर्शन में विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं अध्येता सहभागिता निभाएंगे।

योग प्रभारी डॉ. चंद्रभान शर्मा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित होने वाले इस अभूतपूर्व अखंड सूर्य नमस्कार प्रदर्शन में अनेक विद्यालयों के शिक्षक और छात्र-छात्राएं भी बड़ी संख्या में सोशल मीडिया के लिंक के जरिए भाग लेंगे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 21 जून, 2023

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, पुष्य नक्षत्र रात्रि 1:21 तक, व्याघात योग रात्रि 2:34 तक, गर करण दिन 7:10 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

राजयोग दिन के 3:10 तक है। रवियोग रात्रि 1:21 तक है। आज भद्रा रात्रि 4:19 से गुरूवार सांय 5:28 तक है। आज सायन कर्क में सूर्य प्रवेश रात्रि 8:28 पर होगा। आज से सूर्य दक्षिणायन आरम्भ होगा। वर्षा ऋतु आरम्भ होगी।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:03 तक, शुभ 10:46 से 12:28 तक, चर 3:55 से 5:37 तक, लाभ 5:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:19

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मीन
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।